जिंदगी : एक सड़क

राजबाला शर्मा 'दीप'

जिंदगी एक सड़क
जिस पर चलकर मिलते हैं
सैंकड़ों लोग।
कुछ अपने बन जाते हैं,
और कुछ --
पराये बन खो जाते हैं।

सड़क
जिसके कई मोड़ हैं,
यह दोराहा भी है,
तिराहा और चौराहा भी।
यह हमारे ऊपर है,
हम भ्रमित न हो, अपना लक्ष्य चुने,
मंजिल तक पहुँचें।

सड़क
जो कभी हार नहीं मानती,
देती है संदेश,
चलना ही जीवन की सार्थकता है।

सड़क
पुलों और नदियों को पार कर,
पहाड़ों को चीरती,
चलती लगातार।
जीवन को देती है पैगाम
कि उतार-चढ़ाव तो आते हैं,
हम आगे बढ़ते जाते हैं।

सड़क
न करती भेदभाव,
न देखती जाति-धर्म,
न सोचती ऊंच-नीच,
वह पहुँचाती है,
सबको उनके गंतव्य तक।

सड़क
जिसका कोई मज़हब नहीं,
वह सभी के लिए रास्ता बनाती है।
सभी को एक नजर से आँकती है।

गाँठ प्रेम की

चौक में बैठी देख रही मैं
रस्साकसी बच्चों का खेल,
जर्जर रस्सी टूट गई थी,
सब चुप बैठे, बंद था खेल।

गाँठ
टूटी रस्सी गाँठ बाँध दी,
फिर से शुरू हो गया खेल।
गाँठ बाँध लें हम सद्भाव की,
बिछड़ों में हो जाए मेल ।

एक गाँठ मन में पलती है,
त्रास ही जीवन में भरती है,
मन की गाँठ खोल कर देखो ,
कह कर मन हल्का करती है।

एक गाँठ रक्षा-बन्धन कहलाये,
भाई-बहिन का त्योहार मनाये,
गाँठ विवाह का गठजोड़ा बन,
दो अजनबियों को एक बनाये।

गठबंधन सरकारें आएँ,
सीढ़ी बन कुर्सी चढ़ जाएँ
धक्का देकर एक दूजे को,
झूठ -मूठ के जश्न मनाएँ।

गाँठ बाँध लें हम नेह की
सारा जीवन सफल बनाएँ
द्वेष-भाव का मैल हटाकर
जग को फूलों सा महकाएँ।

अजमेर राजस्थान

ISSN:2583-8849